दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : *dnpggkp@gmail.com*
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 24.02.2026

प्रकाशनार्थ

दिनांक 24.02.2026 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ पी०जी० कालेज, गोरखपुर के शिक्षक-शिक्षा (बी.एड.) विभाग में सूक्ष्म-शिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला तीन सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम सत्र के विषय विशेषज्ञ विभाग के सहायक आचार्य श्री गोपाल सिंह रहे। इस सत्र में आपने अनुशीलन प्रश्न कौशल पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। आपने बताया कि अनुशीलन प्रश्न कौशल शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके माध्यम से शिक्षक छात्रों को स्वयं ही सही उत्तर तक पहुचने में मदद करता है। आपने अनुशीलन प्रश्न कौशल की परिभाषा, उसके उद्देश्य, महत्व तथा उसके प्रमुख घटकों की विस्तृत व्याख्या की साथ ही प्रशिक्षुओं को यह भी बताया कि प्रभावी शिक्षण के लिए अनुशीलन प्रश्न कौशल का निरंतर अभ्यास आवश्यक है। कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं ने सक्रिय सहभागिता करते हुए अपने प्रश्नों के माध्यम से इस सत्र को और अधिक रोचक बना दिया।

द्वितीय सत्र के विषय विशेषज्ञ विभाग के सहायक आचार्य श्री राकेश कुमार सिंह रहे। आपने पुनर्बलन कौशल पर विस्तार से चर्चा की। अपने वक्तव्य में आपने कहा कि पुनर्बलन कौशल शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके माध्यम से शिक्षक, विद्यार्थियों के अधिगम को सुदृढ़ एवं प्रभावी बना सकता है। आपने पुनर्बलन कौशल की संकल्पना, उसके उद्देश्य, महत्व तथा उसके विभिन्न प्रकारों एवं घटकों की व्याख्या की। साथ ही यह भी बताया कि उपयुक्त पुनर्बलन विद्यार्थियों की सहभागिता, उत्साह एवं आत्मविश्वास को बढ़ाता है तथा अधिगम को स्थायी बनाता है। कार्यशाला के इस द्वितीय सत्र में प्रतिभागियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए पुनर्बलन कौशल से संबंधित प्रश्न पूछे और अपने अनुभव साझा किए।

तृतीय सत्र की विषय विशेषज्ञ विभाग की आचार्य प्रो० शुभ्रा श्रीवास्तव रही। आपके द्वारा श्यामपट्ट लेखन कौशल पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया। अपने वक्तव्य में आपने बताया कि श्यामपट्ट लेखन कौशल प्रभावी शिक्षण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है। स्पष्ट, सुगठित एवं सुव्यवस्थित लेखन विद्यार्थियों के अधिगम को सरल और स्थायी बनाता है। आपने श्यामपट्ट पर लिखते समय अक्षरों की स्पष्टता, उचित आकार, संतुलित दूरी, क्रमबद्ध प्रस्तुति तथा मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने जैसे आवश्यक तत्वों पर विशेष जोर दिया। आपने यह भी बताया कि शिक्षक का श्यामपट्ट लेखन विद्यार्थियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है, अतः लेखन में शुद्धता एवं सौंदर्य दोनों का समन्वय होना चाहिए। कार्यशाला में विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए श्यामपट्ट लेखन का अभ्यास भी किया।

इस अवसर पर विभाग के सहायक आचार्य श्री प्रदीप कुमार यादव तथा विभाग के परिचर श्री अमरनाथ चौधरी सहित बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

(डॉ.) शैलेष कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क